Dr. Shyam Sundar Prasad Singh
Asst. Professor
Deptt. of Commerce, Adarsh College Rajdhanwar
B. Com. Hons., Semester — VI, Sess. -2017-20
Core — XVI
Subject. — International Business

Qu No — 1 What do you mean by International Business ? Explain its needs and advantages.
(अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय से आप क्या समझते है? इसकी आवश्यकता एवं लाभों का वर्णन कीजिए। एवं प्रकार।—

Ans:— जब वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय विक्रय तथा आदान-प्रदान दो या दो से अधिक राष्ट्रों के बीच होता है तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहते है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की परिभाषाएँ (Definitions of International Business)

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की परिभाषा कुछ विद्वानों ने इस प्रकार दिये है —(i) सी. एफ. हेनलेक के अनुसार:—"अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार राष्ट्रीय सीमाओं के पार वस्तुओं एवं सेवाओं का विनिमय है।"
(ii) प्रो० हैराल्ड के अनुसार, "विदेशी व्यापार का उदय तब होता है जब श्रम विभाजन राष्ट्रीय सीमाओं से बाहर आगे बढ़ता जाता है।"

अतः ऊपर के परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते है कि देश की सीमाओं के भीतर होने वाला व्यापार राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है, तथा देश के सीमाओं के विभिन्न देशों के बीच होने वाला व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है। विदेशी व्यापार एक देश का दूसरे देश के साथ लाभ के सिद्धान्त पर आधारित होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता (Need of International Business)

रिचार्ड एल० लेफ्टविच के अनुसार "अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार देशों के बीच उन्हीं कारणों से होता है जिसके कारण व्यक्तियों, समाजों तथा देशों के भीतरी क्षेत्रों के मध्य व्यापार होता है। इसमें विनिमय करने वाले समस्त पक्ष लाभ की आशा करते हैं परन्तु राष्ट्र की सीमाओं व मुद्राओं की विभिन्न भिन्नता के कारण विभिन्न देशों में समस्याएं उत्पन्न हो जाती है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता

(A) भौगोलिक आवश्यकता (Geographical need)

प्रत्येक देश की भौगोलिक स्थिति भूमि की बनावट प्राकृतिक साधनों एवं जलवायु में एक दूसरे से काफी अन्तर होता है। जिसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर इसका काफी प्रभाव पड़ता है।

Scanned with CamScanner

(i) भूमि एवं जलवायु :- Land and climate) - अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को किसी देश की भूमि एवं जलवायु भी बहुत प्रभावित करती है। जैसे भारत की भूमि एवं जलवायु चाय, जूट, चावल आदि की खेती के लिए अनुकूल है। ठंडी जलवायु वाला देश गर्म वस्त्रों का आयात करता है एवं गर्म जलवायु वाले देशों को ठंडे पेय पदार्थों का आयात करना पड़ता है। यह भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को जन्म देती है।

(ii) प्राकृतिक संपदा (Natural Resources) - जिस देश में विपुल खनिज एवं वन संपदा होती है। वह देश अपने विपुल साधनों के उत्पादनों को विदेशों में भेजकर विदेशी मुद्रा अर्जित करते हैं।

जिस देशों में इन साधनों की कमी है वे अपनी मांग आयातों से पूरी करने का प्रयास करते हैं। इससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिलता है।

(iii) भौगोलिक स्थिति :- जो देश अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक मार्गों पर स्थित है वे स्वतः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में लिप्त रहते हैं। उपयुक्त भौगोलिक स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का मुख्य कारण है।

(iv) भौगोलिक विभिन्नताएँ (Geographical Differences) - अन्य भौगोलिक विभिन्नताएँ भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को जन्म देती है।

(B) आर्थिक आवश्यकता (Economic need) - इसके अंतर्गत पूंजी, श्रम तकनीकी ज्ञान तथा उत्पत्ति के नियमों की क्रियाशीलता आती है।

(i) विशिष्टीकरण एवं श्रम विभाजन (Specialization and Division of Labour) - विशिष्टीकरण एवं श्रम विभाजन के कारण कम लागत पर अत्यधिक उत्पादन करना सरल हो जाता है जिससे निर्यात को बढ़ावा मिलता है।

(ii) उत्पादन साधनों में कम गतिशीलता (Lack Mobility in Factor Productibity) :- प्राकृति संपदा भूमि एवं वातावरण में गतिहीनता होती है। वहाँ श्रम एवं पूंजी में गतिशीलता सीमित होने से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन मिलता है।

(iii) औद्योगिक एवं तकनीकि ज्ञान में अन्तर - कई देश अपनी तकनीकि ज्ञान की निपुणता के लिए कई प्रकार की आधुनिक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। इससे पिछड़े एवं अल्प ज्ञान अर्जन या औद्योगिक ज्ञान के अभाव वाले देश उसको खरीदकर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देते हैं।

(iv) आर्थिक संकटों में सहायता :- महामारी, बाढ़, भूकंप, अकाल, युद्ध एवं आर्थिक संकट के समय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता बहुत अधिक बढ़ जाती है।

Scanned with CamScanner

(v) तुलनात्मक लागतों में अन्तर :— तुलनात्मक लागतों में अन्तर को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक देश वस्तुओं का आयात निर्यात करते हैं और विदेशी मुद्रा प्राप्त करते हैं।

(vi) उच्च जीवन स्तर की लालसा :— प्रत्येक देश अपने नागरिकों के जीवन स्तर को बढ़ाने का हर संभव प्रयास करता है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिलता है।

(vii) विदेशी विनिमय अर्जन :— एक देश दूसरे देश में अपनी वस्तुएं एवं सेवाओं का निर्यात कर विदेशी मुद्रा अर्जित करते हैं, इससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिलता है।

(viii) उत्पादन आधिक्य का ह्रासमान :— जिस देश में उत्पादन अधिक होता है वे देश निर्यात बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं और जिस देश में उत्पादन कम होता है वे देश निर्यात करके अपनी आवश्यकता पूर्ति करते हैं इससे भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिलता है।

(ix) राजनीतिक आवश्यकता :—

राजनीतिक सम्बन्धों में भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का बहुत बड़ा महत्व है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय के प्रकार :—

अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय के निम्न प्रकार हैं— (A) आयात व्यापार :— जब एक देश का व्यापारी दूसरे देश के व्यापारियों से माल क्रय करता है तब ऐसा व्यापार माल क्रय करने वाले देश के लिए आयात व्यापार होता है।

(B) निर्यात व्यापार :— जब एक देश का व्यापारी दूसरे देश के व्यापारी को माल का विक्रय करता है तो ऐसा व्यापार माल का विक्रय करने वाले देश के निर्यात व्यापार होता है।

(C) पुनर्निर्यात व्यापार :— ऐसा व्यापार जिसमें विदेशों से माल का आयात उसी माल को दूसरे देशों में निर्यात करने के लिए किया जाता है तो उसे पुनर्निर्यात व्यापार कहते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ :—

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से प्राप्त होने वाले आर्थिक और अनार्थिक लाभ निम्नलिखित हैं।

(i) श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण के लाभ :— अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार लाभों को बड़ा बना देता है। प्रत्येक देश कम लागत वाली वस्तुओं का बड़ी मात्रा में उत्पादन करता है तथा उनके विनिमय में अपनी आवश्यकता की दूसरी वस्तुओं प्राप्त कर लेता है।

(ii) प्राकृतिक साधनों का पूर्ण उपयोग :— अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से यह लाभ होता कि देश के Surplus भूमि और श्रम काम में आ जाता है आन्तरिक साधनों का अनुकूलतम उपयोग होता है। उत्पादन शक्तियों देश के प्राकृतिक संसाधनों का खुलकर प्रयोग करती है। जिससे अधिकतम लाभ की प्राप्ति होती है।

Scanned with CamScanner

(iii) बाजार का क्षेत्र विस्तार :- देश के घरेलू उत्पादन का बाजार बढ़ जाता है जिससे अपने प्राकृतिक साधनों का अधिकतम उपयोग करने का अवसर मिल जाता है। जिससे विश्व का कुल उत्पादन बढ़ता है। साधनों की गतिहीनता का दोष दूर हो जाता है।

(iv) उत्पादन विधि में सुधार :- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का महत्वपूर्ण लाभ प्रति योगिता वृद्धि है। प्रत्येक देश अपने उत्पादन के तरीकों को सुधार कर कम लागत में अच्छी वस्तुओं का उत्पादन करके अपना बाजार कायम रखता है।

(v) बड़े पैमाने पर उत्पादन :- जोखिम के अनुसार विदेशी व्यापार करने के लिए किसी देश को बड़े पैमाने की उत्पादन व्यवस्था अपनानी पड़ती है। जिससे बड़े पैमाने के उत्पादन की सभी आंतरिक और बाह्य बचतें उपलब्ध होती है।

(vi) राष्ट्रीय आय में वृद्धि :- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से आयात निर्यात द्वारा सरकार के कर आय में वृद्धि होती है।

(vii) औद्योगिक करण को प्रोत्साहन :- देश की औद्योगिक प्रगति भी विदेशी व्यापार पर निर्भर करती है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार भी सहजता से कच्चा माल, मशीनरी तथा तकनीकि ज्ञान का आयात करके देश के औद्योगीकरण को बढ़ावा दिया जा सकता है।

(viii) उपभोक्ताओं को लाभ :- अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय से प्रत्येक देश के उपभोक्ताओं को भी लाभ पहुँचता है, क्योंकि अब उनको अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में सस्ते मूल्य पर अच्छी किस्म का समान प्राप्त हो जाता है।

(ix) सांस्कृतिक विकास :- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के माध्यम से एक देश के निवासी दूसरे देश के निवासियों की सभ्यता संस्कृति कला आदि का ज्ञान प्राप्त करते है। उनके आचार विचार खान-पान और पहनावे आदि को अपना कर पूरा विश्व एक परिवार जैसा बन जाता है।

(x) विदेशी मुद्रा की प्राप्ति :- अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय के माध्यम से बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है। जिससे किसी देश की साख बढ़ती है।

(xi) संकटकालीन सहायता :- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार द्वारा संकटकालीन परिस्थितियों में, जैसे- अकाल, भूचाल, बाढ़, युद्ध, महामारी आदि में वस्तुएँ आयात के द्वारा रखा की जाती है। जैसे इस समय कोरोना वाइरस के बचाव के लिए एक देश दूसरे देश से बचाव सामग्री आयात करके अपनी जनता को रक्षा प्रदान कर रहा है।

(xii) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग :- अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय से प्रत्येक देश के उपभोक्ताओं को भी लाभ पहुँचता है क्योंकि अब उनकी आवश्यकता की वस्तुएँ मिल जाती है। तथा राष्ट्रों की एक दूसरे पर निर्भरता बढ़ती है।

(xiii) शिक्षा का महत्व :- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के माध्यम से अविकसित देश आर्थिक विकास हेतु आवश्यक वैज्ञानिक एवं तकनीकि ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

Scanned with CamScanner

(xiv) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं एकता को बढ़ावा :— फिशलेवर्जर के शब्दों में "बढ़ते हुए राष्ट्रवाद अन्तर्राष्ट्रीयता दोनों ही दुनियाँ में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आपसी समझ और समझौतों का महत्वपूर्ण साधन है।"
अतः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ उसकी हानियों से अधिक विस्तृत एवं महत्वपूर्ण है।

Shyam Sundar Prasad Singh. B.Com Hons., Core – XVI, Sem. VI, Sub: International Business

Q. –2 वैश्वीकरण क्या है? इसके उद्देश्य, गुण एवं दोषों की विवेचना कीजिए।

Ans.:— वैश्वीकरण को सार्वभौमीकरण, भूमण्डलीकरण और अन्तर्राष्ट्रीयकरण आदि के नामों से भी पुकारा जाता है।
वैश्वीकरण का अभिप्राय किसी देश की अर्थव्यवस्था को विश्व के अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं से जुड़ने से है, जिससे व्यावसायिक क्रियाओं का विश्व स्तर पर विस्तार हो सके तथा देशों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता का विकास हो सके।

वैश्वीकरण की परिभाषाएँ :—
वैश्वीकरण की परिभाषाएँ विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया है :—
(i) भास्कर लेनजे के अनुसार :— "आधुनिक समय में अल्प विकसित देशों के आर्थिक विकास का भविष्य मुख्यतः अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग पर निर्भर करता है।"
(ii) प्रो० एन० वाधुल के अनुसार :— "वैश्वीकरण शब्द बाजार क्षेत्र के तीव्रगति से विस्तार को प्रकट करता है। जो विश्वव्यापी पहुँच रखता है।"
(iii) जान मैसविट एवं पोर्टसिया अबुर्डिन के अनुसार "इसे ऐसे विश्व के रूप में देखा जाना चाहिए जिससे सभी देशों का व्यापार किसी एक देश की ओर गतिमान हो रहा हो। इसमें सम्पूर्ण विश्व एक अर्थव्यवस्था है तथा एक बाजार है।"
अतः ऊपर के परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है, जिसमें एक देश की अर्थव्यवस्था को संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत किया जाता है, ताकि सम्पूर्ण विश्व एक ही अर्थव्यवस्था की ओर एक ही बाजार के रूप में कार्य कर सके और जिसमें सीमाविहीन अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारों के लिए व्यक्तियों, पूँजी तकनीक, माल, सूचना तथा ज्ञान का पारस्परिक विनिमय सुलभ हो सके।

वैश्वीकरण की आवश्यकता
वैश्वीकरण की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से है :—
(1) वैश्वीकरण एकरूपता एवं समरूपता की प्रक्रिया है जिसमें सम्पूर्ण विश्व सिमटकर एक हो जाता है।
(2) वैश्वीकरण की नीति अर्थव्यवस्था के तीव्र विकास में सहायक होती है।

Scanned with CamScanner

③ अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्मों या बहुराष्ट्रीय निगमों के साथ राष्ट्र के उद्योगों की संबद्धता वैश्वीकरण है।

④ वैश्वीकरण के कारण एक देश दूसरे देश से पारस्परिक सहयोग एवं सद्भावनों के साथ वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय विक्रय कर अपनी आवश्यकताओं कि पूर्ति करते हैं।

⑤ वैश्वीकरण की नीति के अन्तर्गत 34 उद्योगों को सम्मिलित किया गया। औद्योगिक नीति के ~~अन्तर्गत~~ अन्तर्गत उच्च प्राथमिकता प्राप्त उद्योगों में 51 प्रतिशत तक के विदेशी पूंजी विनियोग को अनुमति प्रदान की गयी है।

⑥ इसके अन्तर्गत विदेशी उन्नत तकनीकि से निर्मित वस्तुओं तथा औद्योगिक संरचना के लिए आवश्यक बिजली कोयला पेट्रोलियम जैसे मूलभूत क्षेत्रों तक सीमित रखा गया था।

⑦ मशीनों के लिए विदेशी पूंजी उपलब्ध होगी उन्हें स्वतः ~~उद्योग~~ उद्योग लगाने की अनुमति मिल जायेगी।

⑧ वैश्वीकरण की नीति के कारण कोई भी राष्ट्र बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का सहयोग लेकर उन्नत किस्म की वस्तुओं का उत्पादन कर अत्यधिक लाभ अर्जित कर रही है।

⑨ वैश्वीकरण की दशा में प्रवासी भारतीय को पूंजी निवेश के लिए अनेक प्रोत्साहन तथा सुविधाएं दी गयी।

⑩ इस नीति के कारण आज निजि कम्पनियों भी विदेशों में इकाइयाँ स्थापित कर औद्योगिक विश्व व्यापीकरण की ओर अग्रसर है।

वैश्वीकरण से लाभ

① इस नीति के अन्तर्गत दो राष्ट्रों के मध्य वस्तुओं तथा सेवाओं का सुलभ एवं निर्बाध गति से आवागमन के लिए विश्व स्तर पर व्यापारिक बाधाओं को न्यूनतम करने के प्रयत्न किये जाते हैं।

② वैश्वीकरण औद्योगिक संगठनों के विकसित स्वरूप को जन्म देता है।

③ अधिक लाभ प्राप्त हो इसके लिए विकसित देश अपने कोषों का ~~अविकसित~~ अविकसित देशों में विनियोग कर लाभ प्राप्त करते हैं।

④ इस नीति के अन्तर्गत राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास किया जाता है कि विभिन्न राष्ट्रों के बीच सूचना एवं प्रौद्योगिकी का ~~स्वतंत्र~~ स्वतंत्र प्रवाह होकर उन्नत ~~तकनीकी~~ तकनीकि का लाभ सभी ~~राष्ट्रों~~ राष्ट्र उठा सके।

⑤ वैश्वीकरण के अन्तर्गत विभिन्न अनुबंध करने वाले राष्ट्रो में मध्य पूंजी का स्वतंत्र प्रवाह रहता है जिससे पूंजी का निर्माण ~~सम्भव~~ सम्भव हो सके।

⑥ इस नीति के कारण एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों में श्रमिक वर्ग एवं कार्मिक वर्ग का स्वतंत्र रूप से आवागमन संभव होता है।

⑦ इस नीति के कारण अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवहारों पर लगे प्रतिबंधों पर ढील धीरे धीरे बढ़ती जाती है। जिससे अन्तर्राष्ट्रीय

Scanned with CamScanner

व्यापार में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है
(8) वैश्वीकरण के कारण सम्पूर्ण विश्व में संसाधनों की आवंटन एवं प्रयोग की आवश्यकता तथा प्राथमिकता के आधार पर प्राप्त होने लगता है, जो पहले इतनी ~~आसानी~~ आसानी से प्राप्त नहीं होती थी।

वैश्वीकरण के दोष! ~~कमियाँ~~ कमियाँ एवं दुष्परिणाम

(1) आर्थिक असन्तुलन :- वैश्वीकरण के कारण विश्व में आर्थिक असन्तुलन हो जाता है, जिसके कारण गरीब राष्ट्र अधिक गरीब एवं अमीर राष्ट्र अधिक सम्पन्न हो जाता है इस प्रकार देश में गरीब एवं अमीर व्यक्तियों के बीच विषमता बढ़ जाती है।
(2) देशी उद्योगों का पतन :- वैश्वीकरण में विदेशी माल की प्रतियोगिता के सामने देशी उद्योग टिक नहीं पाते हैं। उनका माल बिक नहीं पाता है या घाटे में बेचना पड़ता है, जिसके कारण स्थानीय उद्योग धीरे-धीरे बन्द होते जा रहे हैं।
(3) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का ~~प्रभुत्व~~ प्रभुत्व :- वैश्वीकरण के कारण विश्व के औद्योगिक जगत पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का प्रभुत्व एवं शिकंजा बढ़ता जा रहा है। ये बड़ी बड़ी कम्पनियाँ स्थानीय उद्योगों को निगलती जा रही है, एवं स्थानीय उद्योग या तो बन्द हो रहे है या उनके अधीन जा रहे हैं जैसे ~~कोका~~ कोका कोला कम्पनी ने भारत के थम्स अप, लिम्का के उत्पादन को अपने अधीन कर लिया है।
(4) बेरोजगारी में वृद्धि :- वैश्वीकरण के कारण विदेशी माल मुक्त रूप से भारतीय बाजारों में प्रवेश कर गया है परिणाम स्वरूप स्थानीय उद्योग बन्द हो रहे हैं एवं बेरोजगारी बढ़ रही है। देश में औद्योगिक श्रमिकों की संख्या घट रही है।
(5) राष्ट्र प्रेम की भावना को आघात :- वैश्वीकरण राष्ट्र प्रेम एवं स्वदेश की भावना को आघात पहुँचा रहा है लोग विदेशी वस्तुओं को ~~घटिया एवं तिरस्कार~~ उपभोग करना शान समझते हैं एवं देशी वस्तुओं को घटिया एवं तिरस्कार योग्य समझते हैं।
(6) अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का दबाव :- अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक गैट आदि अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के दबाव में सरकार काम कर रही है। हितों की अवहेलना करके सरकार को उनकी शर्तें माननी पड़ती हैं। भारत जैसे देश को अपनी आर्थिक, वाणिज्यिक एवं वित्तीय नीतियाँ इन संस्थाओं के निर्देशों के अनुसार बनानी पड़ रही है।

Scanned with CamScanner

Shyam Sundar Pd Singh

B.Com. Hons, Sem. VI, Sub.- International Business, Core - XVI

Qu 3 — घरेलू व्यापार (राष्ट्रीय व्यापार) एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार किसे कहते है। एवं घरेलू एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में अन्तर बताएँ।

Ans:— राष्ट्रीय व्यापार :— जब व्यापारिक क्रियाएँ भौगोलिक सीमाओं की परिधि में होती है तो उसे घरेलू व्यापार अथवा राष्ट्रीय व्यापार कहते है। घरेलू व्यवसायिक में लेन देन में एक ही देश के व्यक्ति अथवा संगठन भाग लेते है। साथ ही, एक ही देश के नियम, कानून, नीतियाँ एवं कर प्रणाली लागू होती है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार :— ~~कोई देश अपनी~~ जब वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय विक्रय तथा आदान प्रदान दो या दो से अधिक देशों के बीच होता है तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहते है। इसमें व्यवसाय में विभिन्न देशों की राष्ट्रीयता प्राप्त लोग एवं संगठन भाग लेते है। साथ ही इसमें लेन-देन पर बहुत से देशों के नियम, कानून एवं नीतियाँ सीमा शुल्क एवं कोटा आदि लागू होते है।

घरेलू (राष्ट्रीय) व्यवसाय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रमुख अन्तर है :—

आधार	घरेलू व्यापार	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार
① क्रेता एवं विक्रेताओं की राष्ट्रीयता	घरेलू व्यावसायिक लेन-देन में एक ही देश के व्यक्ति अथवा संगठन भाग लेते है।	अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय में विभिन्न देशों की राष्ट्रीयता प्राप्त लोग एवं संगठन भाग लेते है।
② धारक हितधारियों की राष्ट्रीयता	अनेकों इसके हितधारी जैसे आपूर्तिकर्ता, कर्मचारी, मध्यस्थ, अंशधारक एवं साझेदार आम तौर पर एक ही देश के नागरिक होते हैं।	अन्य इसके हितधारी आपूर्तिकर्ता, कर्मचारी, मध्यस्थ, अंशधारक एवं साझेदार अलग अलग देशों के होते हैं।
③ व्यवसाय संबन्धित नियम एवं नीतियाँ	घरेलू व्यवसाय में, एक ही देश के नियम, कानून, नीतियाँ एवं कर प्रणाली लागू होती है।	अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय में लेन देन पर बहुत से देशों के नियम, कानून एवं नीतियाँ सीमा शुल्क एवं कोटा आदि लागू होते है।

Scanned with CamScanner

आधार	घरेलू व्यापार	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार
4) उत्पादन के साधनों की गतिशीलता	एक देश की सीमाओं में उत्पादन के साधन जैसे-श्रम एवं पूँजी अपेक्षाकृत अधिक गतिशील होते है।	विभिन्न देशों के बीच उत्पादन के साधन जैसे-श्रम एवं पूँजी अपेक्षाकृत कम गतिशील होते है।
5) बाजार में ग्राहकों के स्वरूप में भिन्नता।	घरेलू बाजार में अपेक्षाकृत अधिक समरूपता पाई जाती है।	अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में भाषा प्राथमिकताओं रीति-रिवाजों आदि की भिन्नता के कारण समरूपता का अभाव रहता है।
6) व्यवसाय की ~~प्रणाली~~ प्रणालियों एवं व्यवहार में भिन्नता	एक देश की सीमाओं के भीतर व्यवसाय की प्रणालियों एवं व्यवहार में अधिक समरूपता पाई जाती है	विभिन्न देशों में व्यवसाय की पद्धतियाँ एवं व्यवहार भी भिन्न होते हैं।
7) व्यवसाय ~~संचालन में~~ में प्रयुक्त मुद्रा	अपने देश की मुद्रा ~~प्रयोग~~ प्रयोग की जाती है।	अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय में लेन-देन एक से अधिक देशों की मुद्रा में होता है।

Scanned with CamScanner

Shyam Sundar Prasad Singh
Department of Commerce
Adarsh college Rajdhanwar.

Semester - VI
International Business | वस्तुनिष्ठ प्रश्न
Core-XVI -

① अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का मूल आधार है —
ⓐ निरपेक्ष लाभ ⓑ सापेक्ष लाभ
ⓒ निरपेक्ष तथा तुलनात्मक लाभ ⓓ विनिमय दर।
Ans:— c

② अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रमुख प्रहरी है:—
ⓐ IMF ⓑ IBRD ⓒ WTO ⓓ IFC
Ans. — c.

③ ECGC संबंधित है: —
ⓐ निर्यात संवर्धन ⓑ निर्यात वित्तियन एवं बीमा से
ⓒ निर्यात गुणवत्ता के प्रमाणन से ⓓ निर्यात आँकड़ो के प्रकाशन से।
Ans: — b

④ किन दो वर्षों में भारत में व्यापार संतुलन अनुकूल रहा है?
ⓐ 1970-71 एवं 1975-76 ⓑ 1975-76 एवं 1976-77
ⓒ 1972-73 एवं 1976-77 ⓓ 1976-77 एवं 1977-78
Ans: — 1972-73 एवं 1976-77

⑤ योजनावधि में कितनी बार भारत का विदेशी व्यापार शेष अनुकूल रहा है?
ⓐ एक बार ⓑ दो बार ⓒ तीन बार ⓓ चार बार
Ans: — दो बार (b)

⑥ India Brand equity Fund की स्थापना कब की गई?
ⓐ 1992 ⓑ 1996 ⓒ 1998 ⓓ 1999
Ans: — b

⑦ LNG के आयात के लिए भारत में पहला L.N.G. टर्मिनल कहाँ स्थापित किया गया है?
ⓐ विजाग ⓑ कोच्चि ⓒ दाहेज ⓓ भुवनेश्वर
Ans. — दाहेज (ⓒ)

⑧ भारत के आयात का अधिकतम भाग कहाँ से आता है?
ⓐ उत्तरी अमेरिका ⓑ यूरोपियन समुदाय
ⓒ ओपेक ⓓ अफ्रीकी एवं एशियाई विकासशील देश
Ans. — ओपेक (ⓒ)

⑨ कुल निर्यात और कुल आयात के मूल्य में अंतर को क्या कहते हैं?
ⓐ वस्तु शेष ⓑ व्यापार शेष ⓒ लेखा शेष ⓓ भुगतान संतुलन
Ans: — b. (व्यापार शेष)

Scanned with CamScanner

(10) कौन सा संगठन विदेश व्यापार का संवर्द्धन करता है?
(a) ECGC (b) MMTC (c) STC (d) उपर्युक्त सभी।
Ans. — ECGC —

(11) भारतीय विदेश व्यापार संस्थान कहाँ स्थित है?
(a) नई दिल्ली (b) कोलकता (c) मुम्बई (d) चेन्नई
Ans. — नई दिल्ली ((a))

(12) WTO किस वर्ष से कार्यान्वित हुआ?
(a) 1990 (b) 1993 (c) 1995 (d) 1997

Ans. — 1995 ((c))

(13) TRIPS करार का संचालन किसके द्वारा होता है?
(a) UNCTAD (b) UNO (c) ~~WTO~~ WTO
(d) IBRD.

Ans. — (c) — (WTO)

(14) किस वर्ष में FEMA प्रभावी हुआ?

(a) 1999 (b) 2000 (c) 2002 (d) 2003

Ans. — 2003

Scanned with CamScanner